**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157**
**Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 298-299**

# हरियाणा में प्रजामण्डलों की नींव जीन्द एक संक्षिप्त अध्ययन

**कान्ता**
इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

## प्रस्तवना

अंग्रेजो ने भारत में अपनी सता की स्थापना सुनिश्चित करने के पश्चात देशी रियासतो पर अपनी सर्वोच्चता को स्थापित किया। हरियाणा समेत समस्त देश की रियासतो को अंग्रेजों की प्रभुता स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा। लेकिन रियासतो के शासको का शासन और रवैया इसी सुरक्षा के चले प्रतिक्रियावादी हो गया। वे मनमाने ढ़ंग से शासन करने लगे, तथा प्रजा पर जुल्म करने के साथ उन पर अनेक करो को जबरन थोप दिया गया।[1] भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देशी रियासतो के लोगों को प्रजामण्डल बनाकर सुधारों के लिए आंदोलन चलाने के लिए प्रेरित किया। देश के हिस्सों में ऐसे अनेक प्रजामण्डलों की स्थापना हुई। इन सभी मे आपसी ऐकता स्थापित करने के लिए 1927 में ऑल इण्डिया स्टेट पीपल्स कान्फ्रेंस की स्थापना में पं. जवाहर लाल नेहरू ने उल्लेखनीय योगदान दिया, स्पष्ट यह कह कर कि "देशी रियासतो को शेष भारत से अलग नही रखा ाजा सकता".[2] हरियाणा में भी शेष भारत की अन्य रियासतो की तरह लोहारू, पटोदी, दुजाना, पटियाला, जींद एवं नाभा में प्रजामण्डल आन्दोलन चले।

## 1. लोहारू

हरियाणा के दक्षिण–पश्चिम में लौहारू एक छोटी सी[3] रियासत थी, राजस्थान के मरूस्थल के साथ लगने वाला यह क्षैत्र बंजर एवं रेगिस्तानी था। यहाँ के अधिकांश लोग लोहार का कार्य करते थे, इसलिए इसका नाम लोहारू पड़ा। अहमद बख्श (1806–1827) (प्रथम नवाब) के बाद उसके वशंज अमीनुद्दीन अहमद खां द्वितीय एक विलासी एवं खर्चीला नवाब था। उसने जनता को अनेक अनुचित करो के माध्यम से अनेक कष्ट दिए। इसी के परिणामस्वरूप 20 सित0 1946 ई0 को प्रजामण्डल की स्थापना हुई। इसमें सूबेदार दिलखुश, ठाकुर भंगवत सिंह, चौ0 मेहर सिंह, श्री नत्थूराम आदि ने नवाब को माँगपत्र भेजकर आवश्यक सुधार करने की मांग की। अंत में बाध्य होकर नवाब ने प्रजा मण्डल आन्दोलन की सभी माँगे मान ली।

## 2. दुजाना

दुजाना रोहतक से झज्जर जाने वाली सड़क पर स्थित है। रियासत के रूप में इसका उदय 1805 में हुआ। अब्दुल सयदखाँ दुजाना का प्रथम नवाब बना। 1925 ई0 में बने सातवें नवाब मु0 इफ्तदार अली खाँ ने जनता पर अनेक अनुचित कर लगाते हुए बहुत अधिक भू–राजस्व वसूल किया। इसके विरूद्ध 1945 में दुजाना के लोगों ने नाहड़ में प्रजामण्डल की स्थापना की। राव नेकीराम, प0 हरिराम, प0 ताराचंद, रमजीलाल, मंगतूराम इसके सदस्य बने। इस सभी नवाब का विरोध करते हुए प्रशासन में असहयोग करना शुरू कर दिया जिससे बौखलाए नवाब को आंदोलनकारियों की सभी माँगे मानने के लिए विवश होना पड़ा।[4]

## जींद : एक संक्षिप्त इतिहास

जींद रियासत में 447 गाँव थे और इसका क्षेत्रफल 1300 वर्ग मील था। रिसायत की जनसंख्या 5 लाख एवं इसकी आय 32 लाख रू. आँकी गई थी।[5] जींद हरियाणा की महत्वपूर्ण रियासतों में से एक थी। इस रियासत की स्थापना 1763 ई. में गजपत सिंह ने की थी। 1772 ई0 मुगल बादशाह शाहआलम ने उसे ''राजा'' के खिताब से सम्मानित किया तथा उसके वंशजो ने 1948 तक जींद पर शासन किया। 1887 में रणबीर सिंह जींद रियासत का नया शासक बना। उसने लगभग 1948 ई0 तक शासन किया। उसके काल में अन्य रियासतों की तरह भ्रष्टाचार एवं षंडयंत्रों का बोलबाला था। लोगों पर अनेक प्रकार अनुचित कर लगाए थे। किसानों की दशा बहुत सोचनीय थी, इसी कारण जींद की प्रजा के मन में महाराजा एवं उसके प्रधानमंत्री गंगाराम कौल के विरूद्ध बहुत रोष व्याप्त था। अतंतः 1939 में जींद की राजधानी संगरूर में प्रजामण्डल की स्थापना की गई। शीघ्र ही इसकी एक अन्य शाखा चरखीदादरी में भी खोली गई। जींद रियासत में प्रजामण्डल की नींव रखने वालों में श्रीहंसराज रहबर, डॉ0 सत्यपाल, बनारसीदास गुप्ता, देवी दयाल, श्री राजेन्द्र कुमार जैन, प0 शिवकरण, श्री महताब सिंह, श्री बाबूराम, रामकिशन, लालचंद वर्मा, श्री साधूराम, चौ0 मंगलराम, चिरंजी लाल आदि ने इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[6]

1940 में चरखीदादरी नाम स्थान पर प्रथम जनसभा का अयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ0 सत्यपाल ने की। प0 नेकीराम शर्मा विशेष अतिथि थे। इस जनसभा से रियासत का शासक घबरा उठा, उसने सभी कार्यकर्ताओं को गिरफतार कर लिया। इससे लोगों की भावनाएँ भड़क उठी तथा उन्होंने जनआंदोलन को तीव्र कर दिया। विवश होकर महाराणा ने सभी गिरफ्तार लोगों को रिहा कर दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के चलते जींद में प्रजामण्डल आदोलन को स्थगित करना पड़ा। विश्व युद्ध के उपरांत 1946 ई. लोगों ने प्रशासन में सुधार करने की मांग की। महाराजा ने लोगों की बातों को अनसुना करते हुए सुधार की माँग ठुकरा दी। इस पर प्रजामण्डल के प्रधान श्री बनारसी दास गुप्त ने आंदोलन चलाने की धमकी दी। इस बात पर महाराज ने क्रुद्ध होकर बनारसी दास को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। जहां वे पाँच महीने जैल में रहे। प्रजामण्डल के अन्य सदस्यों को भी जेल भेज दिया गया। इससे रियासत की जनता भड़क उठी और शीघ्र ही फिर से आंदोलन छेड़ने की योजनाएँ बनने लगी। किन्तु इससे पहले की वे ऐसा कोई कार्य करते, महाराज ने जनता की अधिकांश माँगें मान ली और प्रजामण्डल के नेताओं को सम्मान सहित रिहा कर दिया।

आश्वासन के बावजूद रियासत के प्रशासन में महाराज ने कोई विशेष रद्दोबदल नही की। रियासत का प्रधानमंत्री गंगाराम कौल पूर्ववत जुल्म करता रहा। प्रजामण्डल के नेताओं ने इस स्थिति को अच्छी तरीके से व्यवस्थित करने के लिए श्रीहीरा सिंह चिनारिया, जिन्होंने प्रजामण्डल के लिए कार्य करने क लिए नायब तहसीलदारी

को छोड़ दिया था, के नेतृत्व में एक 16 सदस्यीय एक्शन कमेटी बनाई। 8 दिसम्बर 1946 को एक्शन कमेटी के निर्णयानुसार, सार्वजनिक सत्यागृह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ दिया। लगातार बढ़ते आंदोलन तथा देश के बदले हुए वातावरण को देखकर महाराजा ने समझौता करने में ही भलाई समझी।

उसने अपने प्रधानमंत्री को पदच्युत करके उसके स्थान पर मुहम्मद सादिक नामक सरदार को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया। साथ ही आठ सदस्यों के मंत्रिमण्डल का गठन किया, जिसमें दो सदस्य (प्रधानमंत्री के अतिरिक्त) महाराजा द्वारा मनोनित किए गए थे। तथा दो प्रजामण्डल, दो अकाली दल और एक मुस्लिम लीग द्वारा भेजे गए थे।

महाराजा रणबीर सिंह की 1 अप्रैल 1948 ई. में मृत्यु हो गई। उसके पश्चात उसका पुत्र राजबीर सिंह जींद का नया शासक बना। जुलाई 1948 ई0 जींद को पेप्सू में सम्मिलित कर लिया गया।

## सन्दर्भ सूची


1. प्रॉ. मंजीत सिंह सौढ़ी, हिस्ट्री ऑफ हरियाणा, मॉर्डन पब्लिशर, जालंधर, पृ0– 221
2. के.सी. यादव, हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति, मनोहर पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, नयी दिल्ली पृ0–272
3. देबीशंकर प्रभाकर, स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा एक एतिहासिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ0–225.
4. प्रौ0 मंजीत सिंह सौढ़ी, हिस्ट्री ऑफ हरियाणा, मॉर्डन पब्लिशर, जालंधर, पृ0– 223.
5. देवीशंकर प्रभाकर, स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा एक एतिहासिक अध्ययन, उम्मेश प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ0–235.